जम्मू व कश्मीर वन विभाग के वन परिक्षेत्राधिकारियों के लिए मृदा परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

(22.08.2025)

आई.सी.एफ.आर.ई.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जम्मू व कश्मीर वन विभाग के वन परिक्षेत्राधिकारियों के लिए **'मृदा परीक्षण आधारित पोषक तत्व प्रबंधन'** विषय पर **फॉरेस्ट इन्फॉर्मेशन सेंटर**, जम्मू में दिनांक 22 अगस्त 2025 को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देशय वन मृदा और पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में तकनीकी ज्ञान को सांझा करना और वन परिस्थितिकी के बारे में क्षमता निर्माण को बढ़ावा देना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के उदघाटन सत्र में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षण परिषद, देहारादून की महानिदेशक श्रीमति **कंचन देवी** ने बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी और जम्मू व कश्मीर वन विभाग के प्रधान मुख्य अरण्यपाल व वन बल प्रमुख **श्री सुरेश कुमार गुप्ता** विशेष अतिथि के रूप में सम्मिलित हुये। इस अवसर पर वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी श्री सर्वेश राय, चीफ वाइल्ड लाइफ वार्डेन.,श्री टी.रबी कुमार,सी.ई.ओ.कैम्पा, डॉ.के.आनन्ध, सी.एफ.,सेंट्रल, श्रीमति प्रियंका सरीन, सी.एफ., एग्रोस्टोलोजी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी शामिल हुये। प्रशिक्षण कार्यक्रम में जम्मू, कठुआ, सांबा, ऊधमपुर वन मंडलों से संबन्धित वन परिक्षेत्राधिकारियों और इसके अतिरिक्त वन रक्षक ट्रेनिंग सेंटर, अनुसंधान प्रभाग, एग्रोस्टोलोजी प्रभाग के अधिकारियों सहित कुल 40 प्रतिभागियों ने व्यक्तिगत रूप भाग लिया तथा अन्य (60) प्रतिभागियों ने ऑनलाइन माध्यम (गूगल मीट) द्वारा कार्यक्रम में अपनी भागीदारी को सुनिश्चित किया।

आरंभ में, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निदेशक **डॉ.संदीप शर्मा** ने मुख्य अतिथि, विशेष अतिथि एवं सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। तत्पश्चात उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान की प्रमुख अनुसंधान गतिबिधियों, शोध परियोजनाओं और उपलब्धियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की और संस्थान द्वारा अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत जम्मू व कश्मीर के सभी वन मंडलों के **वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड** तैयार करने के विषय में भी अपने विचार सांझा किए। उन्होंने कहा प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देशय का स्पष्ट करते हुये कहा कि इसका आयोजन मुख्यतया **वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड** का फ़ील्ड स्तर पर अनुप्रयोग करने के लिए कार्यसाधक ज्ञान प्रदान करने के लिए और वन परिक्षेत्राधिकारियों को मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रशिक्षित करने के लिए किया जा रहा है।

अपने सम्बोधन में, डॉ.शर्मा ने परियोजना के अंतर्गत विभिन्न वन मंडलों में क्षेत्रीय कार्यों के क्रियान्वयन में जम्मू व कश्मीर वन विभाग द्वारा प्रदत्त सहयोग के लिए विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों का आभार किया तथा सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम से व्यवहारिक लाभ मिलने के आशा व्यक्त की। इसके उपरांत,**श्रीमति कंचन देवी,**महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षण परिषद, देहारादून, **श्री सुरेश कुमार गुप्ता** प्रधान मुख्य अरण्यपाल व वन बल प्रमुख और अन्य अधिकारियों द्वारा जम्मू व कश्मीर के वन मृदा स्वस्थ्य कार्ड जारी किए गए।

अपने सम्बोधन में, श्री **एस. के. गुप्ता** ने मानव, जीवों और वनस्पतियों के सन्दर्भ में मिट्टी की महत्वपूर्ण भूमिका तथा विविध प्राकृतिक एवं मानवजनित कारकों से मिट्टी के अपक्षय के बारे में अपनी चिंता व्यक्त की। उन्होंने वर्ष 2030 तक 2.5 से 3.0 बिलियन अतिरिक्त कार्बन सिंक बढ़ाने के संकल्पों को पूरा करने के लिए वन मृदा स्वास्थ्य के आंकलन की आवशयकता पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि मिट्टी में पोषक तत्वों की उपलब्धता की सही जानकारी के अभाव में पौध रोपण प्रयासों में अभीष्ट सफलता नहीं मिलती है और इस संबंध में अनुसंधान संस्थानो सटीक जानकारी प्रदान करने में योगदान प्रदान कर सकते है। श्री **एस. के. गुप्ता** ने कहा कि प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रतिभागियों को पोषक तत्व प्रबंधन के बारे में बेहतर समझ विकसित करने में सहायक सिद्ध होगा।

अपने अध्यक्षीय भाषण में, श्रीमति कंचन देवी ने मृदा परिस्थिक तंत्र की महत्ता और इसके निर्माण में सहायक विभिन्न कारकों को उजागर करते हुए कहा कि वन मृदा की संरचना और पोषक तत्वों की उपलब्धता का निर्धारण प्राकृतिक पोषक तत्व चक्रण, माइक्रो क्लाइमेट व सूक्ष्म जीवों की सक्रियता के आधार पर होता है। उन्होंने कहा कि वन मृदा के व्यापक अधध्यन के लिए भारत सरकार के वन पर्यावरण व जलवायु परिवर्तन मंत्रलाय द्वारा वित्तपोषित और भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षण परिषद, देहारादून द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना में सभी वन प्रभागों के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाने का कार्य शुरू किया गया और परिषद के प्रत्येक संस्थान को अपने-2 राज्य व केंद्र शासित प्रदेश के अंतर्गत वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाने का कार्य सौंपा गया था। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा हिमाचल प्रदेश, लद्दाख और जम्मू व कश्मीर के सभी वन मंडलों के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाने के प्रायसों की सराहना की। अपने सम्बोधन में, श्रीमति कंचन देवी ने वन संसाधनों के संरक्षण में विभाग के फ्रंटलाईन स्टाफ की भूमिका का विशेष उल्लेख किया और प्राकृतिक संसाधनों के कारगर प्रबंधन के लिए वैज्ञानिकों व वन प्रबन्धकों द्वारा संयुक्त प्रयास करने की अवशयकता पर बल दिया।

तकनीकी सत्र में, **डॉ.आर.के.वर्मा**, वैज्ञानिक व परियोजना अन्वेषक ने पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण द्वारा जम्मू व कश्मीर के वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड संबंधी जानकारी सांझा की। उन्होंने, जम्मू व कश्मीर के वन मंडलों से मिट्टी के सैंपल्स एकत्रण, प्रोसेसिंग और विश्लेषण के बारे में विस्तारपूर्वक विवेचन किया। डॉ. वर्मा ने प्रतिभागियों को विभिन्न वन मंडलों में मृदा परीक्षण आधारित पोषक तत्वों की उपलब्धता, कमी और वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड में दर्शाये गए अनुसंशाओ के विषय पर भी व्यापक जानकारी प्रदान की।

इसी क्रम में, **डॉ. वी.पी.पंवर**, वैज्ञानिक और राष्ट्रीय परियोजना अन्वेषक ने वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड की अवधारणा और वन पारितंत्र उत्पादकता की बारे में प्रतिभागियों के समक्ष के अपने विचार प्रस्तुत किए। **डॉ.पंवर** ने जम्मू व कश्मीर के परिपेक्ष में मृदा पोषक तत्वो के प्रबंधन और विभाग के लिए वन मृदा स्वास्थ्य कार्ड की उपयोगिता के बारे भी प्रतिभगियों को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की। उन्होंने, रोचक प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पौधों की कायिक संरचना में नाइट्रोजन, फास्फोरस, पॉटेश्यम व सूक्ष्म पोषक तत्वों की भूमिका तथा उनकी कमी से होने वाले प्रमुख लक्षणो के बारे मे व्याख्या की ।

अंत में, दुष्यंत कुमार,वरिष्ठ तकनीक अधिकारी एवं परियोजना सह-अन्वेषक ने मृदा पोषक तत्व के प्रबंधन में जैविक खाद/वर्मीकम्पोस्ट और रासयानिक यौगिकों की सही मात्रा तय करने के लिए आवश्यक गणना तथा फील्ड में वन मृदा कार्ड की अनुसंशाओ के उपयोग के बारे प्रस्तुतीकरण दिया। इसके अतिरिक्त, उन्होने प्रतिभागियों को **फॉरेस्ट सॉइल हैल्थ कार्ड पोर्टल** की कार्यप्रणाली के बारे में भी अवगत किया। परिपूर्ण सत्र में, चर्चा के दौरान प्रतिभागियों ने वैज्ञानिकों से मृदा पोषक तत्वों के प्रबंधन के बारे में कई सवाल व्यक्त किए। इस संबंध में, विशेषज्ञों ने अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर विवेचनात्मक रूप से प्रतिभागियों की शंकाओं का निवारण किया। सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में आयोजन और व्यवहारिकता पर सतोष व्यक्त किया। दुष्यंत कुमार, वरिष्ठ तकनीक अधिकारी ने प्रशिक्षण कार्यक्रम ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के सत्रों की कार्यवाही का संचालन किया और समापन्न अवसर पर धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया ।

✪ ✪ ✪ *****✪ ✪ ✪ ✪ ✪ ✪********✪ ✪***** ✪ ✪ *******✪ ✪ ✪ ✪ ✪ ✪******* ✪

☆ कार्यक्रम की प्रमुख झलकियाँ ☆

Capacity Building Programme "Promoting Soil First Based Nutrient Management Practices" for Forest Officers/Officials of UT Jammu & Kashmir
Venue: Forest Information Centre, Bikram Chowk, Jammu

J&K FOREST DEPARTMENT

FOREST DEPARTM

FOREST DEPARTMENT

2025

2025

DG ICFRE inaugurates CBP for J&K Forest Officers, releases Forest Soil Health Cards

GJ REPORT

JAMMU, AUG 22: Director General, Indian Council for Forestry Research and Education (ICFRE), Kanchan Devi, inaugurated a one-day Capacity Building Programme (CBP) for Forest Range Officers (FROs) and frontline officials of the Jammu & Kashmir Forest Department at the Forest Information Centre, Bikram Chowk, Jammu. The training programme focused on Soil Test Based Nutrient Management Practices and enriching field functionaries' knowledge of forest ecosystems.

In her presidential address, the DG emphasized the importance of Forest Soil Health Cards (FSHCs), prepared for all Territorial Forest Divisions of J&K under the initiative of the Ministry of Environment, Forest & Climate Change (MoEFCC), Government of India. She underlined that afforestation and plantation activities must be guided by soil health parameters for long-term success. "There is a seamless connection between vegetation and soils, and the future of plantations depends on understanding soil nutrient status and improving soil health," she said.

DG ICFRE, Kanchan Devi chairing inaugural session of a Capacity Building Programme for J&K Forest Officers at Jammu.

Kanchan Devi also noted that earlier forest soils were assumed similar to agricultural soils, but research has shown they are distinct due to nutrient cycling and rhizosphere biology in natural ecosystems. To address this, ICFRE launched the first-ever pan-India project for preparation of FSHCs under different vegetation types with support from the CAMPA Scheme.

Suresh Kumar Gupta, PCCF & HoFF J&K, thanked ICFRE and Himalayan Forest Research Institute (HFRI), Shimla, for completing the FSHCs for J&K and urged officials to use them for raising quality planting material and ensuring successful afforestation. He emphasized soils' role in carbon sequestration and warned that plantation efforts cannot succeed without addressing soil-related constraints.

Dr. Sandeep Sharma, Director HFRI Shimla, briefed participants about the methodology of preparing FSHCs, including soil sampling from multiple forest types across J&K, analyzed using standard protocols. He stressed that the cards will enable forest officers to make evidence-based field decisions.

Technical sessions were conducted by Dr. R.K. Verma (HFRI, Shimla) and Dr. Vijender Pal Panwar (FRI, Dehradun), who explained the scientific basis of the project, sampling methodology, and national implementation framework.

Forest Soil Health Cards for J&K: DG, ICFRE

JAMMU, AUGUST 22: Director General, Indian Council for Forestry Research and Education (ICFRE), Kanchan Devi, today inaugurated one-day capacity building programme for the Forest Range Officers (FROs) and other frontline functionaries for Jammu and Kashmir Forest Department at Forest Information Centre, Bikram Chowk, here.

The training programme was mainly focused on increasing the capacity of forest officials on Soil Test Based Nutrient Management Practices and enrich knowledge about the forest ecosystems amongst the field functionaries.

DG, ICFRE during her presidential address, highlighted the importance of Forest Soil Health Cards with special reference to Jammu & Kashmir. She said that under the programme launched by Ministry of Environment, Forest & Climate Change, Government of India, Forest Soil Health Cards for all Territorial Forest Divisions have been prepared. She called upon the field officers to plan their afforestation and plantation programmes keeping in view the parameters of soil health of the area for success of plantation programmes.

She told that there is a seamless connection between vegetation and soils. Forest soils develop over a long period of time under the influence of forest cover, bedrock and micro-organisms. Tree species/ vegetation growing in forested landscapes affect the soils as well as the microclimate, she added.

Similarly, growth and survival of trees and associated vegetation largely depends on the health of underlying soil layers. Therefore, understanding the nutrient status and health of forest soils is very essential so as to increase the forest productivity, enhance microbial populations and achieve success in plantation activities and maintain the forest ecosystem stability.

Further, DG, ICFRE said that few years back there was a general perception that forest soils are similar to the agriculture soils and there is no need to study the forest soils separately. But practically forest soils are influenced by the nutrient cycling and rhizosphere biology in the natural environment and it necessitates the need for assessment of forest soils separately.

Therefore, in this backdrop, ICFRE envisioned to take up a broad based study on the forest soils under the All India coordinated research project on Preparation of Forest Soil Health Cards (FSHCs) under different vegetation types in all the forest divisions of the India, with the financial assistance under the CAMPA Scheme from Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEFCC), New Delhi. It is the first initiative of its kind in the forestry sector, aiming at broad assessment of nutrient status in forest soils and subsequently formulate suitable management practices for degraded areas. She said that ICFRE has a pan India presence with nine regional research institutes present in different bio-geo-graphic zones of India.

Suresh Kumar Gupta, Principal Chief Conservator of Forests& HoFF, Jammu & Kashmir, expressed gratitude to ICFRE and HFRI, Shimla for completion of Forest Soil Health Cards for territorial forest divisions of J&K. He advised all the field functionaries attending the programme to seek the guidance from the respective Forest Soil Health Cards of their divisions for raising quality planting material in the nurseries and successful afforestation in the field.

He also called upon continuous interaction and collaboration with ICFRE especially its institute i.e. HFRI, Shimla. He said that soils of world are under stress due to many anthropogenic and natural factors. He asserted that it is essential to assess and improve the soil health in forest ecosystems in view of the nationally determined goals of creating additional carbon sink of 2.5 to 3 billion tons by 2030.

Forest soil health cards to guide afforestation in J&K

Jammu, Updated At : 03:44 AM Aug 23, 2025 IST

Director General, ICFRE, Kanchan Devi, inaugurates one-day capacity building programme for the forest range officers in Jammu.

Director General, Indian Council for Forestry Research and Education (ICFRE), Kanchan Devi, today inaugurated a one-day capacity building programme for the Forest Range Officers (FROs) and other frontline functionaries for Jammu and Kashmir Forest Department at the Forest Information Centre here.

ڈی جی آئی سی ایف آر ای نے جموں میں ایک روزہ تربیتی پروگرام کا افتتاح کیا

جموں / 22 / اگست 2025ء / ڈائریکٹر جنرل انڈین کونسل فار فارسٹری ریسرچ اینڈ ایجوکیشن (آئی سی ایف آر ای) کنچن دیوی نے آج جموں وکشمیر محکمہ جنگلات کے فارسٹ رینج افسران (ایف آر اوز) اور دیگر فیلڈ افسران کے لئے ایک روزہ تربیتی پروگرام کا افتتاح کیا۔ یہ پروگرام فارسٹ انفارمیشن سینٹر بکرم چوک جموں میں منعقد ہوا۔ تربیتی پروگرام کا بنیادی مقصد جنگلات کے ملازمین کی مٹی کے ٹیسٹ پر مبنی غذائی اجزا کے انتظام کے طریقوں پر صلاحیت کو بڑھانا اور فیلڈ عملے میں جنگلاتی ماحولیاتی نظام کے بارے میں معلومات میں اضافہ کرنا تھا۔ ڈائریکٹر جنرل آئی سی ایف آر ای نے اپنے صدارتی خطاب میں جموں وکشمیر کے تناظر میں "فارسٹ سوئیل ہیلتھ کارڈز" کی اہمیت کو اجاگر کیا۔ انہوں نے کہا کہ مرکزی وزارت ماحولیات و جنگلات اور ماحولیاتی تبدیلی کی جانب سے شروع کئے گئے پروگرام کے تحت تمام علاقائی جنگلاتی ڈویژنوں کے لئے یہ کارڈ تیار کئے گئے ہیں۔ انہوں نے فیلڈ افسران پر زور دیا کہ وہ شجرکاری کے پروگراموں کی منصوبہ بندی کرتے وقت علاقے کی ہیلتھ سوئیل کے پیرامیٹروں کو مدنظر رکھیں تاکہ شجرکاری کے منصوبوں میں کامیابی حاصل ہو سکے۔ انہوں نے کہا

کہ نباتات اور مٹی کے درمیان گہرا تعلق ہے۔ جنگلاتی مٹی جنگل کے احاطہ، بیڈرک اور مائیکرو آرگنزم کے زیر اثر ایک طویل عرصے تک تیار ہوتی ہے۔ درختوں کی اقسام اور جنگلاتی پودے مٹی اور مقامی آب و ہوا کو متاثر کرتے ہیں۔ اسی طرح درختوں اور ان سے منسلک پودوں کی نشوونما اور بقا کا زیادہ تر انحصار مٹی کی تہوں کی صحت پر ہے۔ اس لئے جنگلاتی مٹی کی غذائیت کی حیثیت اور صحت کو سمجھنا ضروری ہے تاکہ جنگلات کی پیداوار میں اضافہ ہو، مائیکروبیل آبادی میں اضافہ ہو، شجرکاری کے منصوبوں میں کامیابی حاصل ہو اور جنگلاتی ماحولیاتی نظام میں استحکام پیدا ہو۔ ڈائریکٹر (بقیہ 104)

J&K Forest Department's post

types in various forest division of Jammu and Kashmir.
Dr. Vijender Pal Panwar, Scientist-F and National Project Coordinator (NPC), Forest Research Institute(FRI), Dehradun shared his views and elucidated the genesis, conceptualization, and broad implementation of FSHCs project activities at national level. NPC told uniform methodology has been adopted to collect and analyse the samples.

The programme was attended by Sh. Sarvesh Rai, IFS, PCCF & Chief Wildlife Warden, Sh. T Rabi Kumar, IFS, PCCF/CEO, CAMPA, Conservator of Forests, Divisional Forest Officers and Range Officers. More than 100 officers of various ranks attended the one-day programme, physically and virtually. The inaugural session of the programme was also marked by the official release of Forest Soil Health Cards(FSHCs) of UT J&K.During the plenary session, discussions were made and participants put up queries to clarify their doubts.

Write a comment...